आशीर्वचनम्

आपकी पुस्तक 'स्तोत्र शक्ति' पढ़ी। स्तोत्रों के चमत्कारिक प्रभावों को पढ़कर एकदम से उनकी सत्यता पर विश्वास नहीं हुआ। क्या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह समझाने की कृपा करेंगे कि स्तोत्रों के प्रभावों का आधार क्या है ? किस प्रकार वे भव-भय मिटाने में समर्थ होते हैं ?

हम अपने मुँह से जो भी शब्द निकालते हैं वह वायुमण्डल में गुञ्जरित रहता है। क्योंकि इस वायुमण्डल में से उत्पन्न ध्वनि कभी भी समाप्त नहीं होती है। इसलिये आज वैज्ञानिक इस बात के लिए प्रयत्नशील हैं कि यदि ध्वनि समाप्त नहीं होती वह शाश्वत रहती है तो श्रीकृष्ण और अर्जुन का संवाद तथा वह ध्वनि भी वायु मण्डल में ही गतिशील होगी, यदि ध्वनि की उस तरंग को पकड़ा जा सके, तो उस संवाद को भी सुना जा सकता है।

हम जो कुछ भी बोलते हैं उसका एक निश्चित प्रभाव होता है, वह प्रभाव ही मानव के लिए सार्थक-निरर्थक हो सकता है। विशेष शब्दों के संयोजन से एक विशेष ध्वनि का निर्माण होता है और वह ध्वनि ईथर के माध्यम से प्रवाहित होकर सामने वाले व्यक्ति और उसके विचारों से टकराती है । फलस्वरूप वह उसके मानस को भी आन्दोलित कर देती है और मनोवांछित प्रभाव उत्पन्न करने में सक्षम हो जाती है।

स्तोत्र भी एक प्रकार से विशेष शब्दों का संयोजन है, जिसके माध्यम से एक विशेष प्रकार का ध्वनि-संयोजन तैयार होकर प्रवाहित होता है और सामने वाले व्यक्तित्व को प्रभावित करता है।

हमारी आँखे केवल स्थूल पदार्थों को ही देख पाती हैं, सूक्ष्म मनुष्यों को देखना उनके वश की बात नहीं है, इसीलिए इस विश्व में और वायुमण्डल में भूत,प्रेत, पिशाच, गन्धर्व, और देवता विचरण करते हैं परन्तु हमारी स्थूल आँखें उन्हें नहीं देख पातीं, पर इसका तात्पर्य यह नहीं कि उनका अस्तित्व ही नहीं है।

''इसीलिये जब हम किसी देवता को प्रसन्न करने के लिये तथा मनोवांछित फल प्राप्त करने के लिये स्तोत्र पाठ करते हैं तो उस शब्द-संयोजन से एक विशेष प्रभाव उत्पन्न होता है जो इस जगत में स्थित

संबंधित देवताओं की भावनाओं को उद्वेलित-आन्दोलित करता है और देवता उस प्रभाव से हमारे अनुकूल होकर हमे मनोवांछित फल देने में सहायक हो जाते हैं।''

इसका तात्पर्य यह हुआ कि स्तोत्र से सम्बन्धित ध्वनि प्रवाह बनाने के लिये यह आवश्यक है कि स्तोत्र का सस्वर पाठ किया जाये ?

हाँ, शब्द लहरियाँ दो प्रकार से बनती है—मानसिक स्वर लहरी तथा वायु स्वर लहरी! हम अपने मस्तिष्क में जो कुछ सोचते हैं वह शारीरिक ऊर्जा के माध्यम से प्रस्फुटित होता है और उसेस एक विशेष ध्वनि लहर बनती है तथा सामने वाले व्यक्ति के मानस को आन्दोलित प्रभावित करती है। इसी प्रकार हम जिसे प्रभावित करना चाहते हैं वह प्रभावित हो पाता है।

स्तोत्र का मूल आधार स्वर लहरी है इसीलिये स्तोत्र का मानसिक जप उचित एवं अनुकूल नहीं । स्तोत्र का उच्चारण करना और सही प्रकार से उच्चारण करना आवश्यक है परन्तु कहने और चिल्लाने में अंतर है। इस बात का ध्यान रखा जाये कि स्तोत्र का अर्थ प्रार्थना है, अनुनय है, विनती है और प्रार्थना विनीत भाव से की जाती है, चिल्ला कर अनुनय या विनती नहीं की जाती।

इसलिये स्तोत्र का सस्वर पाठ होना आवश्यक है परन्तु उसके मूल में नम्रता अत्यावश्यक है। जब हम सम्बन्धित देवता से जुड़कर कोई बात कहेंगे तभी तो उसका प्रभाव हो सकेगा। उदाहरण के लिए कोई व्यक्ति हमारे सामने चिल्लाकर दवाब के स्वर में कोई सहायता मांगे तो हम पर अनुकूल प्रभाव नहीं हो सकेगा, हम उसको फटकार कर भगा देंगे, परन्तु इसके विपरीत यदि वह अनुनय पूर्वक, नम्रता से अपनी बात दोहराता है तो उसका हमारे चित्त पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है और हम उसकी सहायता करने को तैयार हो जाते हैं।

इसीलिये प्रभु के सामने अनुनय-विनय से ही अपनी बात रखनी चाहिये, क्योंकि प्रभु तो दाता हैं। अत: स्तोत्र पाठ सस्वर धीमी गति से और मनोवांछित प्रभाव उत्पन्न करते हुये होना चाहिए।

''अधिकतर स्तोत्र संस्कृत में है। आज के युग में अधिकांश लोगों को संस्कृत सही उच्चारण ज्ञात नहीं है, ऐसी स्थिति में यदि संस्कृत का हिन्दी अनुवाद पढ़ लिया जय तो क्या उसका भी वही प्रभाव होना सम्भव है ?''

जैसा कि मैने ऊपर बताया हम प्रभु के सामने अपनी बात अवश्य रख रहे हैं, परन्तु साथ ही साथ विशेष प्रकार की स्वर लहरी भी तैयार कर रहे हैं जो कि उनके हृदय को प्रभावित कर सके। एक विशेष स्वर लहरी तो विशेष शब्द के द्वारा ही सम्भव है जब तक उस मूल शब्द का उच्चारण नहीं होगा, तब तक उस मूल ध्वनि का प्रभाव उत्पन्न होना भी सम्भव नहीं है।

अत: स्तोत्र के मूल पाठ ही पढ़े जाने चाहिये, तभी उनका प्रभाव संभव है। मूल स्तोत्र का हिन्दी अनुवाद या अन्य भाषाओं में किया हुआ अनुवाद मूल भाव को सही रूप में व्यक्त नहीं कर सकता, इसलिये अनुवाद से हम उस प्रभाव को उत्पन्न नहीं कर सकते।

यदि पाठक को संस्कृत का ज्ञान नहीं है तो यह ज्ञान प्राप्त करना असंभव नहीं है। थोड़े से अभ्यास से यह ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। स्तोत्र पाठ मूल संस्कृत में करने से ही मनोवांछित प्रभाव सम्भव है।

आपने स्तोत्र पाठ में सस्वर शब्द का प्रयोग किया, क्या स्तोत्र पाठ सस्वर ही होना अनिवार्य है ?

स्तोत्र का आधार गेय है। कोई भी प्रभाव तभी उत्पन्न हो सकता है जब उसे विशेष लय और ध्वनि के साथ व्यक्त किया जाये।

यदि कोई वीर रस की कविता कमजोर और मरी हुई आवाज मे बोले तो क्या उसका प्रभाव हो सकता है ? हास्य रस की कविता जोर से चिल्लाकर वीर रस के स्वर में पढ़ी जाय तो क्या उसका प्रभाव संभव है ? इसी प्रकार आधारभूत तथ्य यह है कि शब्द में जो भावना हो, उस भावना के अनुरूप ही स्वर का उतार-चढ़ाव होना चाहिये, तभी उसका प्रभाव संभव है।

यदि स्तोत्र करुणापूर्ण है तो उसको चिल्लाकर वीर रस के स्वर में पढ़ने से मनोनुकूल प्रभाव संभव नहीं, उसे तो बिगलित स्वर में करुणापूर्ण ध्वनि में पढ़ना ही मनोवांछित है। जब स्तोत्र पढ़ते पढ़ते आप स्वयं भावनाओं से भींग जायें, आपकी आँखे भर आयें, आपका गला रुंध जाये और आप ईश्वर से एकरस हो जायें, तभी आप समझें कि आप सही रूप से उच्चारण कर रहे हैं, सही तरीके से स्तोत्र पाठ हो रहा है।

गेय का तात्पर्य कोई शास्त्रीय संगीत की पढ़ने से नहीं है। स्तोत्र पाठ करने के लिये सा, रे, गा, मा, पा आदि ध्वनियों का शास्त्रीय ज्ञान होना

अनिवार्य नहीं है, अनिवार्यता है हृदय रस के प्रवाहित होने की, भावनाओं में डूब जाने की, आवश्यकता है ईश्वर से एकाकार हो जाने की, और जब ऐसा हो जाएगा, तो आपका स्तोत्र और आपका हृदय सही रूप में धन्य हो सकेगा।

"स्तोत्र से एकाकार तभी हुआ जा सकता है, जब उस स्तोत्र का अर्थ ज्ञात हो। जब तक उसकी मूल ध्वनि, उसकी मूल भावना ज्ञात नहीं होगी, तब तक व्यक्ति उसमें एकाकार कैसे हो सकेगा? तो क्या किसी भी स्तोत्र का पाठ करते समय उसके अर्थ का ज्ञान होना अनिवार्य है ?"

हाँ, अनिवार्य है। जब तक साधक स्तोत्र के मूल अर्थ को, उसके मूल आधार को, उसकी मूल भावना को नहीं समझेगा, तब तक वह उसमें एकाकार कैसे हो सकेगा? उस स्तोत्र में भली प्रकार से कैसे रम सकेगा ? उस स्तोत्र से अपना तादात्म्य कैसे स्थापित कर सकेगा ? अत: साधक के लिये यह आवश्यक है कि वह पढ़े जाने वाले स्तोत्र को समझे और उसके अर्थ को भली प्रकार से जाने, उसकी मूल भावना का पहिचाने, तभी उसका स्तोत्र पाठ सार्थक हो सकेगा, केवल मात्र तोते की तरह रट देने से या उच्चारण कर देने से पूर्ण सार्थकता सम्भव नहीं।

स्तोत्र और मंत्र में मूलभूत अन्तर क्या है ?

मंत्र एक विशेष प्रकार के शब्दों का संगुम्फन है, और उसमें एक विशेष स्वर लहरी उत्पन्न होती है। मंत्रों के शब्दों का संयोजन एक विशेष प्रकार से होता है। अत: उसका प्रभाव भी अधिकाधिक स्वर से निश्चित रूप से होता है। एक प्रकार के मंत्रों के द्वारा सम्बन्धित कार्य बल से कराये जाते हैं। मंत्र पाठ में हम अधिकारिक रूप से उपस्थित होते हैं। हम जो कुछ चाहते हैं वह होना ही चाहिये। इसीलिये मंत्र में सही प्रकार से उच्चारण आवश्यक है, पर यह आवश्यक नहीं है कि हमें मंत्र के अर्थ ज्ञात हो। जब मंत्र पाठ करते हैं तो उसके अर्थ को मानस में नहीं रखा जाता, केवल मात्र उसके प्रभाव को मानस में रखा जाता है कि इसके द्वारा इतनी अवधि में यह कार्य होना ही है।

इसके विपरीत स्तोत्र में एक विशेष प्रकार की स्वर लहरी उत्पन्न करने की भावना होती है परन्तु उसमें बल नहीं होता। उसमें याचना होती है, हम याचना के द्वारा उस कार्य को सम्पन्न कराने की इच्छा रखते हैं।

अत: स्तोत्र पाठ में यदि त्रुटि भी हो जाती है तो कोई अन्तर नहीं पड़ता। अधिक से अधिक यह होगा कि हम जो कुछ जिस प्रकार से चाहते हैं, वह उस प्रकार से नहीं हो सकेगा। पर इसके विपरीत मंत्र उच्चारण में यह छूट नहीं है, यदि गलत ढंग से या गलत प्रकार से मंत्र उच्चारण होता है तो उसका विपरीत प्रभाव निश्चित रूप से पड़ता है, और हमें उस विपरीत प्रभाव को भोगना ही पड़ता है। अत: मंत्र उच्चारण करते समय विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है। अधिक सावधानी की आवश्यकता है। एक भक्त के दृष्टिकोण से स्तोत्र या स्तुति शब्द कहते ही दो अलग-अलग अस्तित्वों का भान होता है—एक स्तुति करने वाला तथा दूसरा वह, जिसकी स्तुति की जा रही है।

जीवन और ब्रह्म की एकता में विश्वास करने वाले ज्ञानमार्गी या शरीर में निहित ऊर्जा की शक्ति के विकास में विश्वास करने वाले तांत्रिकों के लिये, क्या स्तोत्रों का उतना ही महत्त्व है, जितना भक्तिमार्गी साधकों के लिये ? स्तोत्रों में सम्बन्ध में भक्त, ज्ञानमार्गी और तांत्रिक की भावभूमियों की विवेचना करें?

मैं इसका उत्तर थोड़े बहुत रूप में ऊपर दे चुका हूँ । स्तोत्र, स्तुति या प्रार्थना है, इसमें बल नहीं होता। स्तोत्र के द्वारा हमारा कार्य होगा ही, ऐसा नहीं माना जा सकता, क्योंकि स्तुति का अधार हृदय होता है। जिस स्तोत्र मे जितना ही अधिक हृदयरस मिलेगा, उसका प्रभाव उतना ही अधिक होगा। अत: भक्त के लिये तो स्तोत्र आधारभूत धारणा है, वह तो स्तुति के द्वारा ही प्रभु के चरणों में लीन होने के लिये कटिबद्ध रहता है। उसक मन में न तो बल होता है और न ही दबाव। वह जबरदस्ती करना चाहता ही नहीं। उसकी मूल भावना ही यह रहती है कि मैं दीन-दरिद्री और प्रभु के दरवाजे पर पड़ा रहने वाला भिखारी हूँ, जब भी प्रभु की इच्छा होगी, वे मुझ पर कृपा-कटाक्ष करेंगे, ऐसी दृष्टि से भक्त के लिये स्तुति आधारभूत है। परन्तु तान्त्रिक का मूल आधार तंत्र प्रक्रिया होती है। वह विनय में विश्वास नहीं करता, वह तो आँख में आँख डालकर अपना कार्य सम्पन्न कराना चाहता है, इसलिये उसके लिये स्तोत्र कोई महत्त्व नहीं रखता, क्योकि स्तोत्र का आधार ही विगलित स्वर है, जबकि तंत्र का आधार हठपूर्वक कार्य सम्पन्न कराना है। **जहाँ तक ज्ञानमार्ग का प्रश्न है, वह दोनों ओर खुला है, वह चाहे**

तो भक्त की तरह स्तोत्र के द्वारा अपने कार्य में सफलता प्राप्त कर सकता है और चाहे तो तंत्र प्रक्रिया के द्वारा अपने कार्य में सिद्धि प्राप्त कर सकता है।

इसलिये अघोरी, हठयोगी, मंत्र शास्त्री और तांत्रिकों के लिये स्तोत्र का कोई महत्त्व नहीं होता । यह अलग बात है कि एक तांत्रिक भी दूसरे रूप में मनुष्य होता है, उसके मन में भी कोमल भावनाओं का स्थान होता है और तब वह भक्त बन जाता है। उसके लिये भी स्तोत्र महत्त्वपूर्ण हो जाता है। युद्ध में तलवार से सिर काटने वाला योद्धा भी घर आकर कोमल हृदय वाला मानव बन जाता है और बच्चे के पाँव में काँटा चुभा देखकर उसकी आँखों मे भी आँसू आ जाते हैं, ऐसी स्थिति में वह कोमल हृदय मानव होता है।

अत: जब मनुष्य हृदय की आवाज सुनता है, हृदय की भावनाओं से प्रभु तक पहुँचने की चाह करता है, तब उसके लिये स्तोत्र आधारभूत बन जाता है।

स्तोत्र से सम्बन्धित अपने व्यक्तिगत अनुभव कृपा कर बताइये ?

मैने 'स्तोत्र शक्ति' में सैकड़ों अनुभव लिखें हैं, जो मेरे भी हैं और उन लोगों के भी हैं जो मेरे सम्पर्क में आये हैं या जिन्हें मैंने स्तोत्र पाठ करने की सलाह दी है।

मेरा यह अनुभव है कि स्तोत्र हमारे जीवन का आधारभूत तथ्य हैं। हम मूलत: मानव हैं और मानव वही कहला सकता है जिसमें दया, प्रेम, करुणा, स्नेह और ममत्व हो। ये सारी प्रवृत्तियाँ स्तोत्र में निहित हैं या दूसरे शब्दों में स्तोत्र के माध्यम से ही हमारी इन प्रवृत्तियों का विकास हो सकता है और हम सही रूप में मानव कहलाने में समर्थ हो सकते हैं।

स्तोत्र के द्वारा हम प्रभु के नजदीक होते हैं, उनकी आहट सुन सकते हैं। उनसे बातें कर सकते हैं और भयरहित होकर अपनी बात उनके कानों तक पहुँचा सकते हैं। जब हम स्तोत्र पाठ करते हैं तब सही शब्दों से मानव होते हैं और इस प्रकार हम एक नये वातावरण की सृष्टि उत्पन्न करने में सक्षम हो पाते हैं। जिससे यह संसार ज्यादा सुखी हो सकता है।

(पूज्य गुरुदेव डा० नारायणदत्त जी श्रीमाली के साक्षात्कार पर आधारित, मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान से साभार)